

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2687

दिनांक 16 दिसम्बर, 2025

राजस्थान में सेम की समस्या पर वैज्ञानिक अध्ययन

2687. श्री कुलदीप इंदौरा:

क्या कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार ने राजस्थान में सेम की समस्या के स्रोत और उसकी सीमा का पता लगाने के लिए कोई वैज्ञानिक अध्ययन या सर्वेक्षण किया है, और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इसके मुख्य निष्कर्ष क्या हैं;
- (ख) क्या सरकार को जानकारी है कि राजस्थान के श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में सेम की समस्या लगातार बढ़ रही है, जिससे हजारों हेक्टेयर उपजाऊ भूमि दलदली और बंजर हो रही है और किसानों की आजीविका प्रभावित हो रही है;
- (ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (घ) इस समस्या का समाधान करने और कृषि भूमि के संरक्षण के लिए सरकार द्वारा अब तक क्या अल्पकालिक और दीर्घकालिक उपाय किए गए हैं/किए जा रहे हैं;
- (ङ.) सरकार द्वारा भविष्य में कार्यान्वित की जाने वाली प्रस्तावित योजनाओं का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) : जी, हाँ । भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) - केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (CSSRI) ने राज्य में मृदा लवणीकरण का एक वृहत मूल्यांकन किया है। अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि राजस्थान में लगभग 1,95,571 हेक्टेयर क्षेत्र मृदा लवणता (Sem समस्या) से प्रभावित है। प्रमुख परिणाम यह दर्शाते हैं कि Sem समस्या का घटित होना मुख्यतः जल निकास में बाधा आने, अत्यधिक सिंचाई करने और परिणामस्वरूप भू जल स्तर में वृद्धि होने से होता है, जिससे लवण मृदा में ऊपर की ओर बढ़ने लगते हैं तथा मृदा सतह पर इनका संचयन हो जाता है।

(ख) एवं (ग) : जी हां। सरकार को जानकारी है कि राजस्थान के श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में Sem की समस्या है। इसके कारण उत्पादक कृषि भूमि में पानी भर जाता है और मृदा का डिग्रेडेशन हो जाता है और इस प्रकार इन जिलों में किसानों की जीविका प्रभावित हो रही है। ICAR द्वारा किए गए मूल्यांकन से पता चला है कि श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में लगभग 5,397 हेक्टेयर क्षेत्र Sem से प्रभावित है।

(घ) एवं (ड.) : इस मुद्दे के समाधान के लिए और कृषि भूमि को संरक्षित करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) अल्प कालिक और दीर्घ कालिक उपाय सुझाता है।

अल्पकालिक उपायों में शामिल हैं- जलाक्रांतता और लवण प्रभावित क्षेत्रों का पता लगाने के लिए मृदा की दशा का मूल्यांकन, अधिक जल को बाहर करने के लिए निकास में सुधार, लवणता जमाव को कम करने के लिए सिंचाई का प्रभावी प्रबंधन, फसल दबाव (स्ट्रेस) को सीमित करने के लिए मिश्रित जल संसाधनों का उपयोग, और कृषि उत्पादकता तथा किसानों की जीविका को बनाये रखने के लिए लवण सहिष्णु फसल किस्मों को बढ़ावा देना।

सुझायी गयी दीर्घकालिक प्रौद्योगिकियों में शामिल हैं- दीर्घकालिक सुधार के लिए उप सतही जल निकास प्रणालियों का संस्थापन, भूजल स्तर को प्राकृतिक रूप से कम करने के लिए गहरी जड़ वाले और अधिक वाष्पोत्सर्जन वाली वृक्ष प्रजातियों के माध्यम से जैव-जलनिकास का उपयोग, और मृदा को पूर्व अवस्था में लाने, पारिस्थितिकी सेवाओं को बेहतर बनाने, तथा आय में विविधता लाने के लिए लवण सहिष्णु वृक्ष प्रजातियों वाले कृषि वानिकी मॉडल को अपनाना।

भाकृअनुप (ICAR) इन उपायों/प्रौद्योगिकियों को प्रशिक्षण, प्रदर्शन, अभियानों आदि के माध्यम से बढ़ावा देता है। Sem प्रभावित क्षेत्रों सहित उत्पादकता और मृदा उर्वरता में सुधार के लिए सभी खेतिहर जोतों हेतु मृदा स्वास्थ्य कार्ड (SHCs) प्रदान करने के लिए वर्ष 2014-15 से मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता स्कीम क्रियान्वित की जा रही है।
